विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग नवम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता: २२-०६-२०२० चतुर्थ:पाठ: कल्पतरु:

शब्दार्थ- सर्वभूतानुकम्पी- सभी जीवों पर दया रखने वाले

स्वसचिवैश्च -और अपने मंत्रियों से

यौवराज्येऽभिषिक्तवान् -युवराज के पद पर अभिषेक किया

हितैषिभि: -कल्याण चाहने वालों के द्वारा

सर्वकामद:-सभी इच्छाओं को पूरा करने वाला

शक्र: -इन्द्र

स महान् दानवीर: सर्वभूतानुकम्पी च अभवत् । तस्य गुणै: प्रसन्न: स्वसचिवैश्च प्रेरित:राजा कालेन सम्प्राप्तयौवनं तं यौवराज्येऽभिषिक्तवान् ।यौवराज्ये स्थित: स जीमूतवाहन: कदाचित् हितैषिभि:पितृमन्त्रिभि: उक्त:-"युवराज! योऽयं सर्वकामद:कल्पतरु: तवोद्याने तिष्ठति स तव सदा पूज्य: ।अस्मिन् अनुकूले स्थिते शक्रोऽपि नास्मान् बाधितुं शक्नुयात् "इति।

अर्थ- वह बड़ा दानवीर और सभी जीवों पर दया रखने वाला हुआ । उनके गुणों से प्रसन्न तथा मंत्रियों से प्रेरित राजा ने उचित समय पर यौवन सम्पन्न अपने पुत्र जीमूतवाहन को युवराज के पद पर अभिषेक कर दिया। युवराज के पद पर स्थित उस जीमूतवाहन से उसके हितैषी पिता तथा मंत्रियों ने कहा-"हे युवराज!जो यह सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाला कल्पतरु तुम्हारे उद्यान में स्थित है,वह तुम्हारे लिए सदा पूज्य हैं। इसके सहायक होने पर इन्द्र भी हमें कोई बाधा नहीं पहुंचा सकता है।"